International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-04-2021, Accepted: 05-05-2021, Published: 24-05-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 29-32

गोदान में गरीबी की समस्या: एक मूल्यांकन

पूनम रानी
शोधार्थी हिंदी पीएचडी, राजकीय महाविद्यालय बनबसा (चंपावत), कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

सारांश
साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद के सभी उपन्यास, कहानी व नाटक अपने कथानक मे एंकाकी नही हैं। सामाजिक कहे जाने वाले लगभग कोई भी समस्या उनकी कलम से बच नहीं पायी बाल-विवाह, गरीबी तथा शोषण, आर्थिक समस्या, पूंजीवाद, सामंतवाद, सामाजिक कुरीतियां इत्यादि उपविषयों पर उन्होंने जो कुछ भी लिखा वह समय एंव काल में बंधा नहीं और यही उनकी लेखन शैली की सबसे बड़ी व मुख्य विशेषता है। मुंशी प्रेमचंद की कलम ने जिस भी सामाजिक समस्या पर अपनी स्याही को खर्च किया वह अपने लिखने के समय से लेकर आज तक साहित्यकारों का मार्गदर्शन करने में सक्षम है। मेरे इस शोधपत्र के शीर्षक ''गोदान में गरीबी की समस्या: एक मूल्यांकन'' के अनुसार 'गोदान' में व्याप्त 'गरीबी' व उसके प्रभाव को ही प्रमुखताः से ध्यान में रखकर लेखन कार्य किया गया है, ताकि उक्त शीर्षक के अनुसार फैलाव से ज्यादा गहनता प्राप्त की जा सके।

मूलशब्द: निर्धनता, प्रेमचन्द, गोदान, सामन्तवाद, पूंजीवाद, बेरोजगारी, शोषण, भूखमरी, 'बटाईदार'

प्रस्तावना
मनुष्य जन्म लेने के उपरान्त से ही अपनी मूलभूत व दैनिक आवश्यकताओं से इस कदर बंध जाता है, जहां उसकी अधिकांश जरूरतें धन पर ही निर्भर रहती हैं, जिनकी पूर्ति हेतु 'अर्थ' की आवश्यकता होती है, और इन्हीं जरूरतों को पूर्ण करने के लिए व्यक्ति अर्थोपार्जन के राह पर चल पड़ता है, और धन का यही अभाव उसकी गरीबी का कारण बनता है।

'गरीबी' या 'निर्धनता' ऐसी दयनीय अवस्था है, जहां व्यक्ति जीवन यापन करने के लिए अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी असमर्थ रहता है। जहां उसे दो वक्त का भोजन, पानी, मकान, शिक्षा, वस्त्र, चिकित्सा आदि को पाने के लिए कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। निरन्तर ऐसी ही स्थिति का बने रहना गरीबी कहलाती है। गरीबी कोढ़ से भी भंयकर रोग है, इसके द्वारा उत्पन्न विकृतियों व परिणामों को समझने व समझाने का प्रयत्न विभिन्न विद्वानों द्वारा किया गया है। गरीबी की अवधारणा के सन्दर्भ में कुछ एक विद्वानों द्वारा दिये गये विचारों की प्रस्तुती इस प्रकार से है-

गरीबी का अर्थ व परिभाषा
गिलिन एंव गिलिन के शब्दों में - ''निर्धनता वह दशा है, जिसमें कोई व्यक्ति कम आय अथवा बुद्धिहीन खर्चे के कारण अपने जीवन स्तर को अपनी शारीरिक तथा मानसिक कुशलता के योग्य रखने में असर्मथ रहता है, तथा वह अपने स्वाभाविक आश्रितों को अपने समाज के स्तर के अनुकूल जिसका कि वह सदस्य है, रखने में असर्मथ होता है।''

बीबर के अनुसार -''निर्धनता एक ऐसे जीवन स्तर के रूप में परिभाषित की जा सकती है। जिसमें स्वास्थ्य और शरीर सम्बंधी दक्षता नहीं बनी रहती है।''

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं, कि गरीबी ऐसी स्थिति पैदा कर देती है, जिसमें व्यक्ति अपनी तथा अपने आश्रितों की मूलभूत आवश्यकताओं को भी भली-भांति पूर्ण नहीं कर पाता, इसका कारण धन का अभाव या उसकी फिजूल खर्ची भी हो सकती है। जिससे उसे दरिद्रता का सामना करना पड़ता है। जो व्यक्तियों के रहन-सहन के साथ-साथ समाज को भी प्रभावित करता है, जिससे अनेक समस्यायें जन्म लेती हैं, जिसका प्रतिफल हमें कई रूपों में देखने को मिलता है उदाहरणार्थ - भूखमरी, आत्महत्या, चोरी, वेश्यावृति जैसे अपराधों में वृद्धि, मजदूरी आदि।

गोदान में गरीबी व उसके रूप
मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखा उपन्यास 'गोदान' अपने अन्दर कई ऐसी समस्याओं को उजागर करता है, जिसमें मुख्य रूप से गरीबी का चित्रण अधिक हुआ है। उपन्यास 'गोदान' में गरीबी से उत्पन्न समस्याओं के कई रूप जैसे- भूखमरी, दहेज समस्या, पलायन अनमेल विवाह, कृषक का मजदूर बनना आदि देखने को मिलता है। प्रेमचंद ने जब 'गोदान' लिखा उस समय भारतीय समाज मे तीव्र संक्रमण का दौर चल रहा था। जहां एक तरफ था सामंतवाद तो दूसरी तरफ था पूंजीवाद। 'गोदान' तत्कालीन शोषण तथा ऋण की समस्या से तील-तील मरते तथा आर्थिक कठिनाइयों से जूझते गरीब ग्रामीण कृषक होरी की कथा है। जिसकी आर्थिक स्थिति का पता हमें उपन्यास के आरम्भ के पृष्ठों से ही चल जाता है, कि धन के अभाव में कैसे दवा न मिलने से उसके तीन बच्चे जो बचपन में ही मर जाते हैं '' उसका मन आज भी कहता है, अगर उनकी दवा-दारू होती तो वे बच जाते'' अपनी आर्थिक तंगी से बच्चों को एक-एक कर गवा देने की घटना

होरी के हृदय को अन्दर तक छलनी कर देता है, किन्तु अपनी विपन्नता के कारण होरी चाह के भी कुछ नहीं कर पाता।

'गोदान' न सिर्फ होरी की दयनीय स्थिति का यर्थाथ चित्रण है, अपितु सम्पूर्ण भारतीय गरीब जनता की समस्याओं तथा उनके ऊपर हो रहे शोषण का विस्तृत दृश्य भी अंकित करता है। रामविलास शर्मा के अनुसार - ''गोदान में किसानों के शोषण का रूप ही दूसरा है। यहां सीधे-सीधे रायसाहब के कारिन्दें होरी का घर लूटने नहीं आते लेकिन उसका घर लूट जरूर जाता है। यहां अंग्रेजी राज के कचहरी कानून सीधे-सीधे उसकी जमीन छीनने नहीं पहुंचते लेकिन जमीन छिन जरूर जाती है।'' स्पष्ट है, कि कैसे पूंजीवादी तथा सामंतवादी व्यवस्था के कारण गरीब किसानों का शोषण होता है। समाज में ऐसे ही उच्चवर्ग के लोग प्रायः मध्यमवर्ग व निम्न वर्गो के लोगों का शोषण करते आये हैं। ऐसी व्यवस्था के चलते शोषितों के लिए अपना निर्वाह करना और अधिक कष्टमय हो जाता है। साथ ही अन्य समस्यायें भी उत्पन्न होने लगती हैं। जिसमें अर्थोपार्जन की समस्या और अधिक पैदा होती है, ये व्यवस्थायें उन्हें अन्दर ही अन्दर खोखला करती रहती हैं, जो उन्हें चाह कर भी इस दरिद्रता के दलदल से कभी बाहर नहीं आने देतीं। इन व्यवस्थाओं के चलते व्यक्ति अपनी आवश्यकतायें तो दूर अपनी छोटी-छोटी अभिलाषायें भी पूर्ण नहीं कर पाता जैसे होरी की गाय लेने की लालसा जो कभी पूर्ण नहीं हो पाती, कभी वह अपने ही खेतों के लिए दातादीन का मजूर बनता है, तो कभी गाय पाने की इच्छा उसे किसान से मजदूर बनने को विवश कर देती है, जिसका एक मार्मिक दृश्य प्रेमचंद प्रस्तुत करते हुए कहते हैं- ''संयोग से उसी दिन एक ठीकेदार ने सड़क के लिए गांव के उसर में कंकड़ की खुदाई शुरू की। होरी ने सुना तो चट-पट वहां जा पहुंचा और आठ आने पर रोज खुदाई करने लगा ; अगर यह काम दो महीने भी ठीक गया तो गाय भर को रूपये मिल जायेंगे।'' अन्य भारतीय कृषकों की भांति होरी की भी यही इच्छा थी, कि उसके द्वार पर भी एक गाय बंधी हो, किन्तु एक समय ऐसा आता है, जब होरी के पास न खेत रहता है, न कोई काम बेचारा दिन-दिन भर इधर-उधर मारा-मारा फिरता कार्तिक का महीना बीत चुका था मजदूरी का भी कहीं पता न था, न घर में खाने को था, न पहनने को भूख के मारे बच्चों की आंते सूख जाती थी, दूसरों के खेतों में बुआई करने से जो थोड़ा बहुत अनाज मिलता था उसी से रात को पेट की आग मिटा ली जाती थी। होरी की आर्थिक दशा ने उसे कृषक से मजूर तो बना दिया, जिससे न तो उसकी आर्थिक तंगी कम हुयी और न ही गाय लेने का स्वपन ही पूर्ण हुआ।

होरी 'गोदान' का नायक है। वह भले व्यवहार से भद्र, कुलीन, उदात्त स्वभाव का हो किन्तु कई अर्थो में वह अभद्र है। वह गरीब, शक्तिहीन तथा कमजोर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता हुआ एक साधारण सा व्यक्ति है, और सम्पूर्ण जीवन अपने धर्म, मरजात, बिरादरी के लिए इस कदर संघर्ष करता रहा, कि कई ज़गह वह कुछ अनैतिक तथा अमानवीय कृत करने से भी नही चूकता जहां वह धन के अभाव में दहेज न दे सकने के कारण अपनी ही छोटी बेटी रूपा का विवाह एक अधेड़ पुरूष के साथ करने को भी विवश हो जाता है- ''रामसेवक होरी से दो चार साल ही छोटा था कहां फूल सी रूपा और कहां वह बूढ़ा ढूंठ।'' दहेज एक अभिशाप है। एक गरीब परिवार दहेज की समस्या से निपटने के लिए हर सम्भव प्रयत्न करता है। होरी भी ऐसा ही करता है, किन्तु जब वह पूर्ण रूप से हताश व निराश हो जाता है, तो अन्त में आकर वह अनमेल विवाह जैसा अपराध कर बैठता है। इस बार उसके इस अपराध में वह अकेला नहीं है, बल्कि धनिया भी शामिल हो जाती है। धन का अभाव दोनों को इस तरह से लाचार बना देता है, कि दोनों यह अपराध करने को विवश हो जाते हैं।

वर्तमान परिपेक्ष्य में जीवित समस्यायें

वर्तमान समय में अगर हम बात करें तो दहेज का स्वरूप आज पहले से भी कहीं ज्यादा विशुद्ध, विकराल तथा कुलषित हो चुका है। जो आज पूंजी और व्यापार के रूप में स्थापित होकर समाज और व्यक्ति के नैतिकता और पवित्रता को धूमिल करते जा रहा है। जिसकी भरपाई पिता और माता के साथ-साथ बेटियों को अपनी पूरी जिन्दगी को दांव पर रखकर करनी पड़ती है।

प्रेमचंद ने अपने समय में व्याप्त समस्याओं को उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त किया है। जहां पहले सामंती व्यवस्था के अन्त्रगत ब्याज पर रूपये दिये जाते थे। आज वक्त बदल गया है। आज बैंकों द्वारा कर्ज दिया जाता है। और समय पर ऋण न चुका पाने के कारण गरीब किसान आत्महत्यायें कर रहे हैं। गरीब आज भी उतना ही परेशान है, जितना कि पहले। ये समस्यायें कम होने के वजह धीरे-धीरे बढ़ती नजर आ रही हैं। प्रेमचंद ने शोषण की प्रक्रिया के सम्रग रूप को दिखाया है। उन्होंने केवल गांव के ही संदर्भ में नहीं बल्कि शहरों में भी रह रहे निम्नवर्गीय लोग कैसे शोषण का शिकार होते हैं को भी गोबर के माध्यम से दिखाया है। जहां उसे अपनी जीविका हेतु रोजी-रोटी के लिए गांव से पलायन कर शहर में घुटन भरी जिन्दगी का सामना करना पड़ता है। जहां उसे छोटे से मकान में रहना पड़ता है। द्वार के आगे बढ़ी मुश्किल से आने-जाने के लिए एक गज का ही रास्ता था। जहां से दिन भर दुर्गन्ध उड़ा करती थी। झुनियां और बच्चा बड़ी मुश्किल से यहां रहते थे। इस पिंजरे से घर में झुनियां रात-दिन रोया करती न कहीं बाहर जा सकती थी, न इस छोटे से घर में इधर-उधर उठ-बैठ सकती थी। ऐसी स्थिति का होना जो कहीं न कहीं परिवार विघटन का कारण भी बन जाती है। मुक्ति बोध के अनुसार-''इस दौर की सबसे बड़ी समस्या है, संयुक्त परिवार का टूटना: कुछ इस तरह से होरी का भी घर भी टूट जाता है।'' आर्थिक पलायन हो या अन्य कारणों से किया गया पलायन जो परिवार के लिए भी समस्यायें पैदा कर देता है।

वर्तमान समय में संयुक्त परिवार विघटन की समस्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। पहले एक-आध गोबर भाग कर गांव से शहरों हो जाते थे, आज इनकी संख्या सैंकड़ों में है। अपनी आर्थिक स्थिति के चलते वे शहरों को पलायन तो कर जाते हैं, परन्तु वहां जाकर वे पूंजीवाद व्यवस्था के बनाये जाल में फंसते चले जाते हैं। जहां उन्हें न चाहते हुये भी मजदूरी करने, बोझा उठाने, गाड़ी चलाने आदि के लिए विवश होना पड़ता है। जिस तरह आज वर्तमान समय में मजदूरों का शोषण हो रहा है, उसका एक दृश्य हमें बहुत पहले ही प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में गोबर के रूप में देखने को मिलता है। जो औधोगिकीकरण

परिवेश के चलते मजदूरों की अव्यस्त जीवन-शैली को दर्शता है, जहां गोबर भी अपनी गरीबी के चलते कृषक से मजदूर बन जाता है और ''खोचें से निराश होकर शक्कर के मिल में नौकरी कर ली।'' जहां उसका मिल मालिकों द्वारा दिन-रात शोषण किया जाता है।

आजादी के बाद आज किसानों को उनका हक मिला है। अब वह भी अपनी जमीनों के मालिक है, किन्तु इसके बाद भी आज के युग में हमें शोषण का नया रूप 'बटाईदार' के तौर पर देखने को मिल रहा है। जहां बटाई की नयी व्यवस्था अपनायी जाती है, और गरीब किसानों को लूटा जाता है। ''अब कागज नहीं लिखे जाते, अंगूठे नहीं लगवाये जाते पर ऋण दिया जाता है, और ब्याज के साथ वसूला जाता है। बेगारी और बंधुआगिरी खत्म हो गयी है, पर बंधुआ और बेगार आज भी हैं।'' प्रेमचंद ने भारतीय जन-जीवन से सम्बंधित गांव और शहरों की उन सामाजिक समस्याओं से हमें अवगत कराया है, जहां शोषण के महाप्रभु रायसाहब और उनके कारिन्दों से भी ज्यादा समझदारी दिखाते हुये गरीब व बेगुनाह जनता को लुटते हैं। आज भी जहां सैंकड़ो होरी जैसे गरीब लोग जीते-जी नर्क की यातनायें झेल रहें हैं।

आधुनिक समय में गरीबी निवारण कार्यक्रम व प्रेमचंद

प्रेमचंद के समय में गरीबी निवारक कार्यक्रम चाहे भले ही न रहे हो, किन्तु उन्होंने समाज में व्याप्त गरीबी की समस्या को गम्भीरता से लेते हुये उसे उपन्यासों में बेबाक तरीके से प्रस्तुत भी किया। प्रेमचंद के उपन्यासों में न सिर्फ हमें समाज के विभिन्न वर्ग, जाति, धर्म आदि से जुड़ी समस्याये देखने को मिलती हैं, अपितु उन्होंने मानवीय तथा अमानवीय चेहरों के आकलन के साथ-साथ उसके पीछे हो रहे कारणों को भी खोजने का सफल प्रयास किया है। उन्होंने कहीं तो इन समस्याओं पर सीधे प्रहार किया है, तो कहीं संकेतो के माध्यम से भी दिशा निर्देशित करते रहें हैं। प्रेमचंद धार्मिक थे, किन्तु धर्मान्ध नहीं। उन्होंने परम्पराओं के विरूद्ध जा कर समाज में हो रहे शोषण के प्रति अपनी कलम चलायी। पहली बार उन्होंने पाठकों का भ्रम तोड़ते हुये उन्हें गरीब किसानों, मजदूरों की दयनीय स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने 'गोदान' में औधोगिकीकरण और पूंजीवादी व्यवस्था को न सिर्फ बारीकी से पकड़ा बल्कि इस व्यवस्था के चलते गरीबों पर हो रहे शोषण व अत्याचार को विस्तार से अभिव्यक्त भी किया। उन्होंने अज्ञानता को कहीं न कहीं इन समस्याओं की जड़ माना जिसके कारण अशिक्षित लोग अपने अधिकारों को बिना जाने इससे वंचित रह जाते हैं और इन पूंजीपतियों से हमेशा ही लुटते आये हैं। प्रेमचंद का मानना है कि शिक्षा ही वह साधन है जिसकी राह पर चल कर व्यक्ति अपने उज्ज्वल भविष्य की कल्पना कर सकता है। और इसी के माध्यम से वह कोई योग्य रोजगार कर अपने आर्थिक स्तर को सुधार कर सकता है। जिसके चलते उन्होंने शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करते हुये अपने लगभग सभी उपन्यासों में शिक्षा के प्रति लोगो को अपने पात्रो के माध्यम से प्रेरित भी किया। जैसे उपन्यास 'निर्मला' में मंसाराम द्वारा निर्मला को पढ़ाना, 'कायाकल्प' में चक्रधर द्वारा मनोरमा को पढ़ाना, 'गोदान' में मालती का बाहर जाकर शिक्षा ग्रहण करना या फिर 'प्रेमाश्रम' में प्रेमशंकर का भी बाहर विदेश जाकर कृषि विषय में शिक्षित होना और गांव वापस आकर गरीब किसानों के लिए कृषिशाला खोलकर उन्हें रोजगार देने के साथ कृषि को और अधिक उन्नत बनाने के लिए मदद करना आदि। इन्हीं सब समस्याओं से उबरने के लिए जहां प्रेमचंद जीवन पर्यन्त लोगों को दिशा निर्देशित करते हुये अपनी कलम को घिसते रहे, वहीं वर्तमान समय में भारतीय सरकार द्वारा भी इन समस्याओं को कम करने के लिए कुछ नीतियों के साथ-साथ ''गरीबी निवारण कार्यक्रम'' भी चलाये गये है, जिससे लोगों को आय के उचित साधन प्राप्त हो सके, और वह अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सके, जिसका अति संक्षेप विवरण निम्नव्त है जैसे-

1. सघन कृषि जिलाकार्यक्रम 1960-61
2. ग्रामीण रोजगार 1972-74
3. काम के बदले अनाज कार्यक्रम 1977-78
4. इन्द्रिरा आवास योजना 1985
5. अन्नपूर्णा योजना 19 मार्च 1919

ये कुछ प्रमुख योजनाएं है, जिस पर अगर सरकार द्वारा सही से अमल किया जाये तो गरीबी की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। गरीबी किसी एक राष्ट्र या देश की समस्या नहीं है, बल्कि यह एक बहुआयामी समस्या है। जिससे निपटने के लिए कई तरह के उपाय करने की आवश्यकता है। चूंकि हमारे देश की अधिकांश जनसंख्या और यहाँ की मूल अर्थव्यवस्था कृषि पर ही टिकी है, ऐसे में जरूरी हो जाता है, कि कृषि तथा ग्रामीण क्षेत्रों को और अधिक विकसित किया जाये और कृषि योग्य साधन उपलब्ध कराये जायें, क्योंकि कृषि पर आधारित उद्योग न सिर्फ ग्रामीणों के लिए रोजगार उपलब्ध कराती है, अपितु रोजगार के साथ-साथ औधोगिक संस्कृति को भी बढ़ाने में मददगार साबित होती है।

निष्कर्ष

समग्रतः कहा जा सकता है, कि 'गोदान' अपने आप में एक समस्यामूलक उपन्यास है, जिसमें प्रेमचंद ने कृषक जीवन की समस्या के साथ गरीबी, भुखमरी, मजदूरों की समस्या, बेरोजगारी आदि को गम्भीरता के साथ दिखाया है। एक समाज सुधारक के तौर पर उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक परिवर्तन का जो क्रम शुरू किया उसमें वह पूर्ण सफल भी हुये हैं। 'गोदान' अपने आप मे तथ्यों के आधार पर चाहे इतिहास की श्रेणी से बाहर हो पर अपने समय का सजृनात्मक इतिहास अवश्य ही कहा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. 'भारतीय सामाजिक समस्याएं', उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, उत्तरायण प्रकाशन हल्द्वानी, पृ0 65।
2. प्रेमचंद 'गोदान' सुमित्र प्रकाशन, इलाबाद, संस्करण 2018, पृ0 05
3. शर्मा रामविलास, 'पे्रमचंद और उनका युग', राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली दसवां संस्करण 2018 पृ0 97।

4. प्रेमचंद 'गोदान' प्रकाशन सुमित्र प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2018 पृ0 299।
5. उपर्युक्त पृ0 235।
6. सिंह नामवर, 'प्रेमचंद और भारतीय समाज,' राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली पहला संस्करण 2017 पृ0 164।
7. सिंह सरोज, 'भारतीय मुक्ति आन्दोलन और प्रेमचंद,' लोकभारती प्रकाशन इलाहबाद, प्रथम संस्करण 2017 पृ0 306।
8. शिवकुमार, 'पे्रमचंद की विरासत और गोदान,' लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2011 पृ0 149।
9. ग्रामीण समाजशास्त्र', वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा।